



पाठ – सात

शगोल-काङ्जै

प्राचीन, आधुनिक, उत्पत्ति, उद्गम-स्थान, अंतर्राष्ट्रीय, प्रत्येक, खिलाड़ी, गेंद, खंभा, सीमा-रेखा, छड़ी, संक्षेप, हत्था, बेंत, सिरा, हिस्सा, जड़, हल्की, घुटना, धोती, पगड़ी, पतला, पट्टीनुमा, चिबुक, बाँधना, पीठ, कसना, जीन, घुड़सवार, आवश्यक।



शगोल-काङ्जै मणिपुर का एक प्राचीन खेल है। “शगोल-काङ्जै” से ही आधुनिक खेल पोलो की उत्पत्ति हुई। इस खेल का उद्गम-स्थान मणिपुर है। अब यह अंतर्राष्ट्रीय खेल बन गया है।

शगोल-काङ्जै दो दलों के बीच खेला जाता है। प्रत्येक दल में सात-सात खिलाड़ी होते हैं। खिलाड़ी अपने-अपने घोड़े पर बैठकर गेंद से खेलते हैं। यह खेल खुले मैदान में खेला जाता

है। इस खेल के लिए गोल का खंभा नहीं होता, सीमा-रेखा ही गोल-रेखा होती है। दोनों ओर के खिलाड़ी किसी भी गोल-रेखा में गेंद को ले जा सकते हैं। गेंद द्वारा सीमा-रेखा पार करने पर गोल माना जाता है।

प्रत्येक खिलाड़ी के हाथ में एक छड़ी होती है। इसे काड्जै-काड्हु कहते हैं। संक्षेप में इसे काड्जै भी कहते हैं। काड्जै का हत्था बेंत का होता है। गेंद मारने के सिरे का हिस्सा लकड़ी का होता है। शगोल-काड्जै खेल में प्रयुक्त गेंद को मणिपुरी में 'काड्द्रूम' कहा जाता है। यह बांस की सूखी जड़ से बनी होती है और हल्की होती है।

प्रत्येक खिलाड़ी घुटने के ऊपर तक धोती पहनता है। सिर पर बड़ी पगड़ी बाँधी जाती है। इसके ऊपर एक पतला पट्टीनुमा कपड़ा चिबुक तक बाँधा जाता है। इस खेल के लिए विशेष रूप से तैयार की गई जीन घोड़े की पीठ पर कसी जाती है। शगोल काड्जै के लिए प्रत्येक खिलाड़ी को एक अच्छा घुड़सवार होना आवश्यक है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थों को समझो :—

प्राचीन	=	पुराना।
आधुनिक	=	नए जमाने का, नवीनतम।
उत्पत्ति	=	जन्म, उद्गम।
उद्गम स्थान	=	जन्म स्थान, मूल स्रोत।
अंतर्राष्ट्रीय	=	दो या दो से अधिक देशों से सम्बन्धित।
खिलाड़ी	=	खेलनेवाला व्यक्ति।
गेंद	=	एक गोला जो खेल में प्रयोग किया जाता है (बॉल)।
मैदान	=	चौड़ी और सपाट जमीन।
खंभा	=	स्तंभ।
सीमा रेखा	=	किनारे की पंक्ति।
छड़ी	=	बाँस आदि का पतला एवं छोटा डंडा।
हत्था	=	मूठ; चाकू या छड़ी आदि पर हाथ से पकड़ने का भाग।
सिरे का हिस्सा	=	किनारे का अन्तिम भाग, अगला भाग।

जड़	=	पेड़-पौधों आदि का वह मूल भाग जो जमीन के अन्दर रहता है, मूल।
हल्की	=	कम भार वाली।
घुटना	=	जाँघ और टाँग के बीच का जोड़।
पगड़ी	=	सिर पर बाँधा जाने वाला साफा।
पतला	=	तरल, महीन।
चिबुक	=	ठोड़ी।
जीन	=	घोड़े या ऊँट की पीठ पर कसा जाने वाला बैठने का आसन।
कसना	=	खींचकर बाँधना।
घुड़सवार	=	घोड़े पर सवार होने वाला।

2. उत्तर दो :—

- (क) शगोल काड्जै मणिपुर का कैसा खेल है ?
- (ख) इससे किस खेल की उत्पत्ति हुई है ?
- (ग) इस खेल का उद्गम स्थान कहाँ है ?
- (घ) इस खेल में कितने खिलाड़ी होते हैं ?
- (ङ) यह खेल कैसे खेला जाता है ?
- (च) इस खेल में गोल कब माना जाता है ?
- (छ) खिलाड़ी हाथ में क्या पकड़ता है ?
- (ज) काड्जै का हत्था किस चीज का बना होता है ?
- (झ) काड्जै के सिरे के लकड़ी के हिस्से को क्या कहा जाता है ?
- (ञ) इस खेल की गेंद को मणिपुरी में क्या कहा जाता है ?
- (ट) शगोल काड्जै की गेंद किससे बनी होती है ?
- (ठ) खिलाड़ी क्या पहनता है ?
- (ड) प्रत्येक खिलाड़ी को क्या होना आवश्यक है ?
- (ढ) मणिपुर में प्रचलित कुछ प्राचीन खेलों के नाम लिखो ।
- (ण) मणिपुर के किसी प्राचीन खेल के बारे में चार वाक्य लिखो ।

3. वाक्य बनाओ :—

प्राचीन -----
खिलाड़ी -----
मैदान -----
बेंत -----
जड़ -----
पगड़ी-----
पतला -----
जीन -----
घुड़सवार -----

4. याद रखो :—

- (क) शगोल-काइजै का उद्गम-स्थान मणिपुर है।
(ख) अब यह अन्तर्राष्ट्रीय खेल बन गया है।
(ग) शगोल-काइजै के लिए प्रत्येक खिलाड़ी को एक अच्छा घुड़सवार होना आवश्यक है।

5. खाली जगह भरो :—

- (क) शगोल-काइजै मणिपुर का ।
(ख) अब शगोल-काइजै अन्तर्राष्ट्रीय ।
(ग) प्रत्येक खिलाड़ी के हाथ में ।
(घ) काइजै का हथ्था ।
(ङ) प्रत्येक खिलाड़ी को एक अच्छा ।

6. तालिका को देखो, पढ़ो और वाक्य बनाओ :—

शगोल-काइजै	मणिपुर का एक प्राचीन खेल का उद्गम-स्थान मणिपुर दो दलों के बीच खेला खुले मैदान में खेला	जाता	है।
------------	---	------	-----

7. शगोल-काङ्जै के बारे में पाँच वाक्य लिखो :-

8. ध्यान से पढ़ो, समझो और याद करो :

एक ही वाक्य में विशेष अर्थ लाने के लिए कभी-कभी क्रिया के साथ एक से अधिक धातुओं का प्रयोग होता है, इसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

इस पाठ में भी कुछ ऐसी संयुक्त क्रियाएँ हैं, जैसे :—

बन जाना, माना जाना।

इसी तरह छः अन्य संयुक्त क्रियाएँ लिखो :
